नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में
प्रेमचंद जयंती पर 'हिंदी गद्य के विकास में प्रेमचंद का योगदान' विषय पर राष्ट्रीय ई-परिचर्चा
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग का आयोजन

प्रेमचंद हिंदी गद्य के जादुगर थे – कमल किशोर गोयनका

वर्धा, 31 जुलाई 2020: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 30 जुलाई को प्रेमचंद जयंती पर 'हिंदी गद्य के विकास में प्रेमचंद का योगदान' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय ई-परिचर्चा में बतौर मुख्य अतिथि सुविख्यात आलोचक कमल किशोर गोयनका जी ने कहा कि प्रेमचंद पर उर्दू, फारसी और अरबी भाषाओं के संस्कार हैं. उन्होंने कफ़न पहले उर्दू में लिखी. राष्ट्रीय जीवन में आने के लिए प्रेमचंद ने हिंदी में लिखना प्रारंभ किया. अनेक कालजयी रचनाओं का सृजन कर उन्होंने हिंदी भाषा को समृद्ध किया. वे हिंदी गद्य के जादुगर थे.

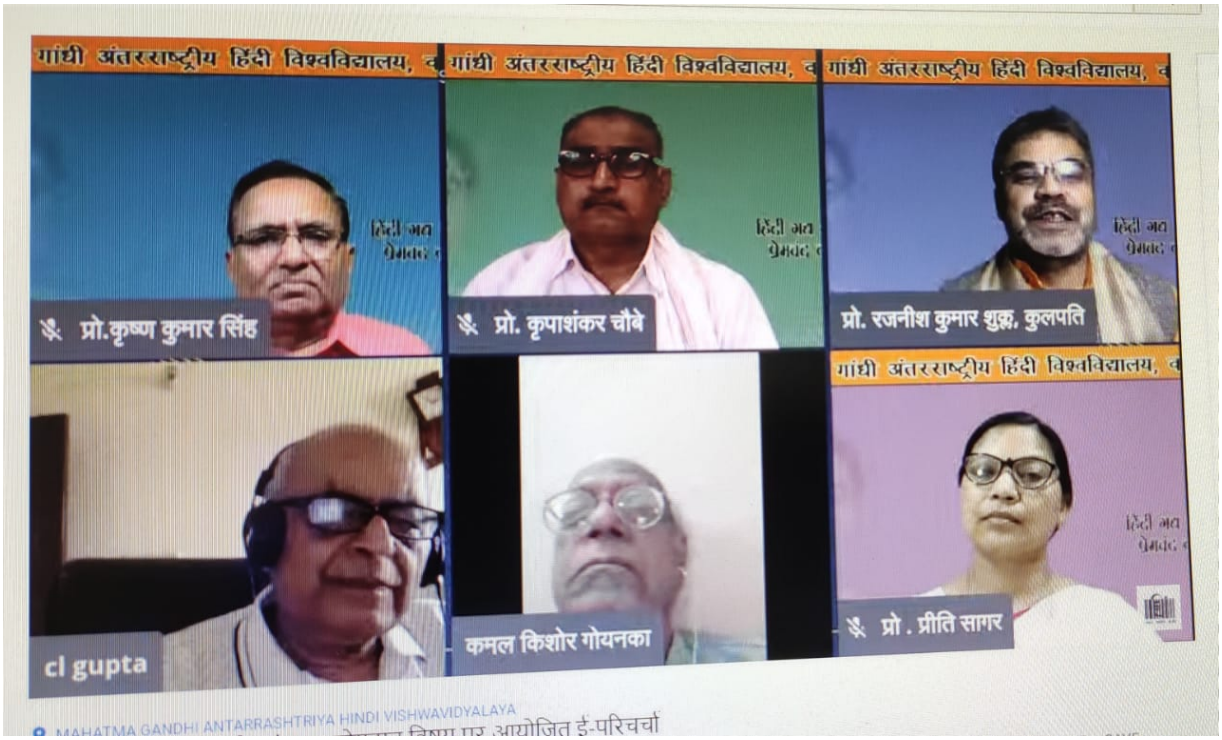

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के सहयोग से आयोजित इस राष्ट्रीय ई-परिचर्चा की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। परिचर्चा में सारस्वत अतिथि के रूप में हिमाचल प्रदेश के साहित्यकार चमनलाल गुप्त ने विचार रखे. परिचर्चा में स्थानीय प्रतिभागी के रूप में विश्वविद्यालय के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता तथा जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृपा शंकर चौबे, हिंदी साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता

एवं परिचर्चा की संयोजक प्रो. प्रीति सागर और हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने सहभागिता की.

राष्ट्रीय ई-परिचर्चा का सजीव प्रसारण विश्वविद्यालय के आधिकारिक यू टयूब, फेसबुक और ट्विटर चैनल पर किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका 'बहुवचन' के प्रेमचंद साहित्य पर एकाग्र और कमल किशोर गोयनका जी को समर्पित विशेषांक का लोकार्पण कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल की ओर से किया गया.

प्रेमचंद पर 30 से अधिक ग्रंथों के लेखक तथा प्रेमचंद साहित्य के अध्येता कमल किशोर गोयनका जी ने कहा कि प्रेमचंद की उर्दू स्वाभाविक भाषा थी और हिंदी को उन्होंने अर्जित किया था. गोयनका जी ने प्रेमचंद के साहित्य में शब्दों की अर्थवत्ता, लोक जीवन में प्रयुक्त मुहावरों और भाषा का वैशिष्ट्य आदि पर सारगर्भित विचार प्रकट किये. एक प्रश्न के जवाब में उन्होंने कहा कि भारतीय आत्मा की रक्षा और स्वराज इन दो उद्देश्यों को केंद्र में रखकर प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है. उन्होंने विश्वविद्यालय की ओर से प्रेमचंद के साहित्य पर गंभीर शोध की आवश्यकता पर बल दिया.

चंडीगढ़ से वरिष्ठ आलोचक, अनुवादक चमनलाल गुप्त जी ने कहा कि उत्तर भारतीय समाज की संवेदना, उनकी जीवन शैली की भाषा में लिखकर प्रेमचंद ने भाषा की नयी प्राण प्रतिष्ठा की. उनकी रचनाओं में प्रयुक्त भाषा समाज की धरोहर बन गयी है.

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल जी ने जानकारी देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से प्रेमचंद पर प्रयोग कोश का कार्य प्रगति पथ पर है. प्रेमचंद के रचना संसार पर उन्होंने कहा कि प्रेमचंद के यथार्थ लेखन का प्रभाव सिनेमा, पत्रकारिता, आलोचना के साहित्य पर पड़ा है.

कार्यक्रम का संचालन संयोजक प्रो. प्रीति सागर ने किया. परिचर्चा के

सह-संयोजक साहित्य विद्यापीठ के असोसिएट प्रो.डॉ. रामानुज अस्थाना एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी थे. कार्यक्रम का प्रारंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से किया गया. डॉ. रामानुज अस्थाना ने आभार ज्ञापन किया. ई-परिचर्चा में अध्यापक, शोधकर्ताओं तथा विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता की.

महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात

प्रेमचंद जयंती निमित्त 'हिंदी गद्याच्या विकासात प्रेमचंद यांचे योगदान' विषयावर राष्ट्रीय ई-परिचर्चा

प्रेमचंद हिंदी गद्याचे जादुगर होते – कमल किशोर गोयनका

वर्धा, 31 जुलै 2020: प्रेमचंद यांच्यावर उर्दू, फारसी आणि अरबी या भाषांचे संस्कार झाले. त्यांनी कफ़न ही कादंबरी आधी उर्दू मध्ये लिहिली. प्रेमचंद यांनी हिंदीमध्ये लिहिण्याचा जाणीवपूर्वक प्रयत्न केला. अनेक रचनांमधून त्यांनी हिंदी भाषेला समृद्ध केले. ते हिंदी गद्याचे जादुगर होते, असे मत प्रेमचंद यांच्या साहित्याचे अभ्यासक व सुप्रसिद्ध समीक्षक कमल किशोर गोयनका यांनी मांडले. ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात 30 जुलै रोजी प्रेमचंद जयंतीनिमित्त 'हिंदी गद्याच्या विकासात प्रेमचंद यांचे योगदान' या विषयावरील

राष्ट्रीय ई-परिचर्चेत मुख्य अतिथी म्हणून बोलत होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल होते. यावेळी सारस्वत अतिथी म्हणून हिमाचल प्रदेश
येथून वरिष्ठ समीक्षक चमनलाल गुप्त सहभागी झाले. स्थानिक वक्ते म्हणून विश्वविद्यालयातील जनसंचार विभागाचे अध्यक्ष प्रो. कृपा शंकर चौबे, साहित्य विद्यापीठाच्या अधिष्ठाता व परिचर्चेच्या संयोजक प्रो. प्रिती सागर आणि हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्राचे अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह सहभागी झाले.
ई-परिचर्चेचे सजीव प्रसारण विश्वविद्यालयाच्या यू टयूब, फेसबुक आणि ट्विटर चॅनल वर करण्यात आले.
याप्रसंगी 'बहुवचन' या त्रैमासिकाच्या प्रेमचंद साहित्यावरील अंकाचे लोकार्पण कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांनी केले.
प्रेमचंद यांच्यावर 30 हून अधिक ग्रंथांचे लेखक कमल किशोर गोयनका यांनी प्रेमचंद यांच्या साहित्याचा मागोवा घेतला. ते म्हणाले की भारतीय आत्म्याचे संरक्षण आणि स्वराज या दोन उद्देश्यांना केंद्रस्थानी ठेऊन प्रेमचंद यांनी हिंदी साहित्यात महत्वाचे योगदान दिले आहे.
चमनलाल गुप्त म्हणाले की उत्तर भारतीय समाजाची संवेदना आणि त्यांच्या जीवन शैलीची भाषा यांचे प्रतिबिंब प्रेमचंद यांच्या साहित्यात उमटते. त्यांची भाषा ही समाजाचा ठेवाच बनली आहे असेही ते म्हणाले.

कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल म्हणाले की विश्वविद्यालयाच्या वतीने प्रेमचंद यांच्यावर प्रयोग कोश तयार करण्याचे कार्य प्रगतीपथावर आहे. प्रेमचंद यांच्या वास्तववादी लेखनाचा प्रभाव सिनेमा, पत्रकारिता आणि समीक्षेच्या साहित्यप्रकारांवर पडला असेही ते म्हणाले.
कार्यक्रमाचे संचालन प्रो. प्रिती सागर यांनी केले. साहित्य विद्यापीठाचे असोसिएट प्रो.डॉ. रामानुज अस्थाना व सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी परिचर्चेचे सह-संयोजक होते. डॉ. रामानुज अस्थाना यांनी आभार मानले. ई-परिचर्चेत अध्यापक, शोधकर्ते व विद्यार्थ्यांनी मोठया संख्येने उपस्थिती दर्शविली.

माननीय संपादक / संवाददाता
महोदय, कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।
धन्यवाद।